

## आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2020-21

### प्रलिस के लयः

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS), ढाष्ट्रीय सांख्यकी कार्यालय (NSO), बेरोजगारी दर, श्रम बल,

### मेन्स के लयः

रोजगार, संवृद्धि और वकिस, मानव संसाधन, भारत में बेरोजगारी के प्रकार, बेरोजगारी से लड़ने के लयः सरकार द्वारा हाल की पहलें

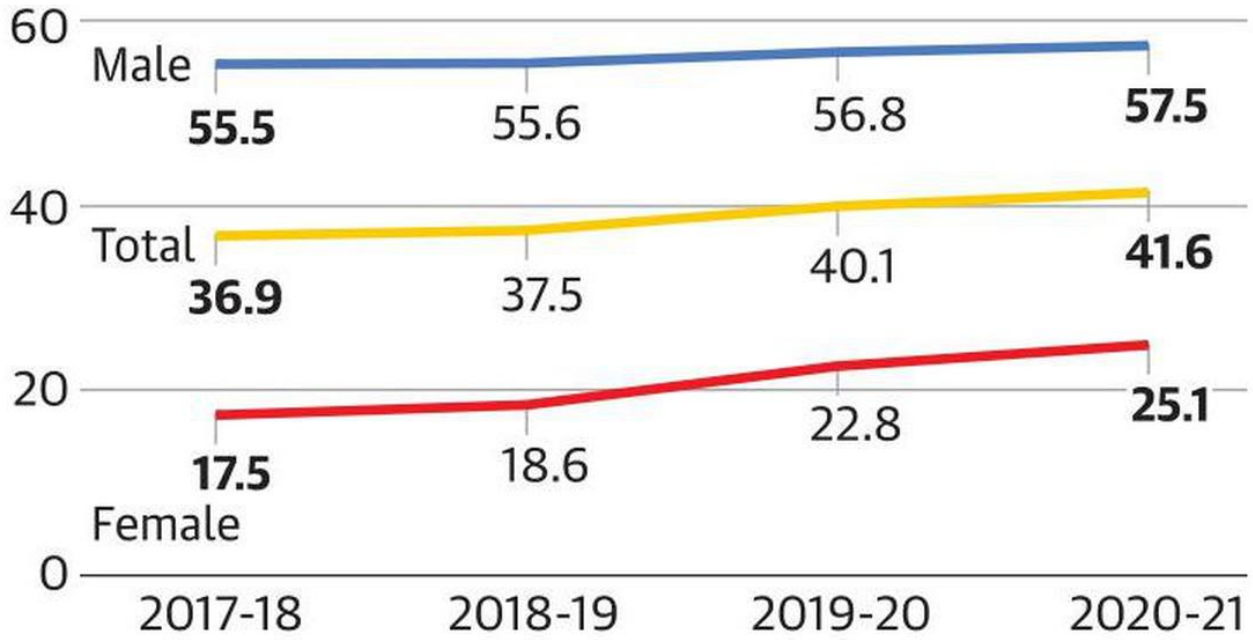
### चर्चा में क्यों?

हाल ही में [सांख्यकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय \(MOSPI\)](#) द्वारा 2020-21 के लयः [आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण \(PLFS\)](#) जारी कयः गया ।

### PLFS के मुख्य बदि :

- **बेरोजगारी दर:**
  - इससे पता चलता है कः बेरोजगारी दर वर्ष 2020-21 में गरकर 4.2% हो गई, जबकः वर्ष 2019-20 में यह दर 4.8% थी ।
  - ग्रामीण क्षेत्रों में 3.3% तथा शहरी क्षेत्रों में 6.7% की बेरोजगारी दर दर्ज की गई ।
- **श्रम बल भागीदारी दर (LFPR):**
  - जनसंख्या में श्रम बल (अर्थात् काम करने वाले या काम की तलाश करने वाले या काम के लयः उपलब्ध) में व्यक्तियों का प्रतशित पछिले वर्ष के 40.1% से बढकर वर्ष 2020-21 के दौरान 41.6% हो गया ।
- **श्रमकः जनसंख्या अनुपात (WPR):**
  - यह पछिले वर्ष के 38.2% से बढकर 39.8% हो गया ।
- **प्रवासन दर:**
  - प्रवासन दर 28.9% है । ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की प्रवासन दर क्रमशः 48% और 47.8% थी ।

# Looking for work

 | The labour force participation rate (LFPR) has continued to improve further in 2020-21, according to the latest Periodic Labour Force Survey. The graph shows LFPR over years across genders


## अन्य प्रमुख बट्टि

- **बेरोज़गारी दर:** बेरोज़गारी दर को श्रम बल में बेरोज़गार व्यक्तियों के प्रतिशत के रूप में परिभाषित किया गया है।
- **श्रम बल:** करेंट वीकली स्टेटस (CWS) के अनुसार, श्रम बल का आशय सर्वेक्षण की तारीख से पहले एक सप्ताह में औसत नयोजित या बेरोज़गार व्यक्तियों की संख्या से है।
- **CWS दृष्टिकोण:** शहरी बेरोज़गारी PLFS, CWS के दृष्टिकोण पर आधारित है।
  - CWS के तहत एक व्यक्तिको बेरोज़गार तब माना जाता है यदि उसने सप्ताह के दौरान किसी भी दिन एक घंटे के लिये भी काम नहीं किया, लेकिन इस अवधि के दौरान किसी भी दिन कम-से-कम एक घंटे के लिये काम की मांग की या काम उपलब्ध था।
- **श्रमिक जनसंख्या अनुपात (WPR):** WPR को जनसंख्या में नयोजित व्यक्तियों के प्रतिशत के रूप में परिभाषित किया गया है।

## आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS):

- अधिक नयित समय अंतराल पर श्रम बल डेटा की उपलब्धता के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) ने अप्रैल 2017 में आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) की शुरुआत की।
- **PLFS के मुख्य उद्देश्य हैं:**
  - 'वर्तमान साप्ताहिक स्थिति' (CWS) में केवल शहरी क्षेत्रों के लिये तीन माह के अल्पकालिक अंतराल पर प्रमुख रोजगार और बेरोज़गारी संकेतकों (अर्थात् श्रमिक-जनसंख्या अनुपात, श्रम बल भागीदारी दर, बेरोज़गारी दर) का अनुमान लगाना।
  - प्रतविष ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में सामान्य स्थिति (पीएस+एसएस) और CWS दोनों में रोजगार एवं बेरोज़गारी संकेतकों का अनुमान लगाना।

## बेरोज़गारी से निपटने हेतु सरकार की पहल:

- **"समाइल- आजीविका और उद्यम के लिये सीमांत व्यक्तियों हेतु समर्थन"** (Support for Marginalized Individuals for Livelihood and Enterprise-SMILE)

- पीएम-दकष (प्रधानमंत्री दकष और कुशल संपन्न हतिग्राही) योजना
- महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA)
- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)
- स्टार्टअप इंडिया योजना

## भारत में बेरोजगारी के प्रकार:

- **प्रचछन्न बेरोजगारी:** यह एक ऐसी घटना है जिसमें वास्तव में आवश्यकता से अधिक लोगों को रोजगार दिया जाता है।
  - यह मुख्य रूप से भारत के कृषि और असंगठित क्षेत्रों में व्याप्त है।
- **मौसमी बेरोजगारी:** यह एक प्रकार की बेरोजगारी है, जो वर्ष के कुछ नश्चित मौसमों के दौरान देखी जाती है।
  - भारत में खेतहिर मजदूरों के पास वर्ष भर काफी कम कार्य होता है।
- **संरचनात्मक बेरोजगारी:** यह बाजार में उपलब्ध नौकरियों और शर्मकों के कौशल के बीच असंतुलन होने से उत्पन्न बेरोजगारी की एक श्रेणी है।
  - भारत में बहुत से लोगों को आवश्यक कौशल की कमी के कारण नौकरी नहीं मिलती है तथा शक्ति के खराब स्तर के कारण उन्हें प्रशिक्षित करना मुश्किल हो जाता है।
- **चक्रीय बेरोजगारी:** यह व्यापार चक्र का परिणाम है, जहाँ मंदी के दौरान बेरोजगारी बढ़ती है और आर्थिक विकास के साथ घटती है।
  - भारत में चक्रीय बेरोजगारी के आँकड़े नगण्य हैं। यह एक ऐसी घटना है जो अधिकतर पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं में पाई जाती है।
- **तकनीकी बेरोजगारी:** यह प्रौद्योगिकी में बदलाव के कारण नौकरियों का नुकसान है।
  - वर्ष 2016 में विश्व बैंक के आँकड़ों ने भविष्यवाणी की थी कि भारत में ऑटोमेशन से खतरे में पड़ी नौकरियों का अनुपात वर्ष-दर-वर्ष 69% है।
- **घर्षण बेरोजगारी:** घर्षण बेरोजगारी का आशय ऐसी स्थिति से है, जब कोई व्यक्ति नई नौकरी की तलाश या नौकरियों के बीच स्वचि कर रहा होता है, तो यह नौकरियों के बीच समय अंतराल को संदर्भित करती है।
  - दूसरे शब्दों में एक करमचारी को नई नौकरी खोजने या नई नौकरी में स्थानांतरित करने के लिये समय की आवश्यकता होती है, यह अपरहिर्य समय की देरी घर्षण बेरोजगारी का कारण बनती है।
  - इसे अक्सर स्वैच्छिक बेरोजगारी के रूप में माना जाता है क्योंकि यह नौकरी की कमी के कारण नहीं होता है, बल्कि वास्तव में बेहतर अवसरों की तलाश में शर्मक स्वयं अपनी नौकरी छोड़ देते हैं।
- **सुभेद्य रोजगार:** इसका अर्थ है, अनौपचारिक रूप से काम करने वाले लोग, बना उचित नौकरी अनुबंध के और बना किसी कानूनी सुरक्षा के।
  - इन व्यक्तियों को 'बेरोजगार' माना जाता है क्योंकि उनके काम का रिकॉर्ड कभी नहीं रखा जाता है।
  - यह भारत में बेरोजगारी के मुख्य प्रकारों में से एक है।

## यूपीएससी सविलि सेवा, वगित वर्षों के प्रश्न:

प्रश्न: प्रचछन्न बेरोजगारी का आम तौर पर अर्थ होता है-

- बड़ी संख्या में लोग बेरोजगार रहते हैं
- वैकल्पिक रोजगार उपलब्ध नहीं है
- शर्म की सीमांत उत्पादकता शून्य है
- शर्मकों की उत्पादकता कम है

उत्तर: (d)

व्याख्या:

- अर्थव्यवस्था प्रचछन्न बेरोजगारी को प्रदर्शित करती है जब उत्पादकता कम होती है और बहुत से शर्मक जरूरत से ज्यादा संख्या में कार्यरत होते हैं।
- सीमांत उत्पादकता उस अतिरिक्त उत्पादन को संदर्भित करती है जो शर्म की एक इकाई को जोड़कर प्राप्त की जाती है।
- चूँकि प्रचछन्न बेरोजगारी में आवश्यकता से अधिक शर्मक पहले से ही कार्य में लगे हुए हैं, इसलिये शर्म की सीमांत उत्पादकता शून्य है।

अतः विकल्प (c) सही है।

## स्रोत: द हट्टू

